संस्कृत साहित्य में देवर्षि नारद का स्वरूप

(वेदों से श्रीहर्ष तक की कृतियों के विशिष्ट संदर्भ में)

भगवद्भक्ति के प्रधानाचार्य लोक-प्रसिद्ध देवर्षि नारद का महान चरित्र जगत् के लिए परम आदर्श है। इस असार संसार के मध्य, समस्त चराचरात्मक सृष्टि में, जिस प्रकार प्रत्येक परमाणु में सर्वव्यापी भगवान् की सत्ता विद्यमान है, उसी प्रकार पुराण, उपपुराण, इतिहासादि धार्मिक ग्रन्थ हमारे चरित्रनायक देवर्षि नारद के उपदेशों, सिद्धान्तों और चारित्रिक गुणों से ओतप्रोत हैं। वैदिक साहित्य में ऋग्वेदादि संहिताएं, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थों से लेकर आर्ष ग्रन्थों रामायण एवं महाभारत में, अष्टादश पुराणों, तथा आधुनिक लौकिक साहित्य इत्यादि में सर्वत्र देवर्षि नारद के अलोकसामान्य चारित्रक गुणों का उद्घाटन होता है। देवर्षि नारद ज्ञान के स्वरूप, भक्ति के सागर, दयानिधान, सर्वविद्यानिधि, आनन्दराशि, विश्व के सहजहितकारी, तथा समस्त गुणों की खान हैं। सभी युगों, लोकों, शास्त्रों, समाजों में देवर्षि नारद का प्रवेश है। गोलोक, वैकुण्ठ, ब्रह्मलोक, स्वर्ग पाताल इत्यादि सभी लोकों में उनकी गति है। भगवान् विष्णु, शिव, इन्द्रादि से लेकर घोर राक्षस तक इनका सम्मान तथा विश्वास करते हैं। महाभारत तथा पुराणों के आधार पर कहा जा सकता है कि देवर्षि नारद ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में से एक हैं तथा इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के कण्ठ से बताई गई है। दक्ष प्रजापति की सन्तानों को भागवद्धर्म का उपदेश देकर गृहस्थाश्रम से विमुख करने के कारण दक्ष के शाप से इनका जन्म पुनः कश्यप ऋषि के पुत्र के रूप में होता है। विष्णु माया द्वारा भ्रमित नारद का विवाह राजा सृञ्जय की सुकुमारी नाम की कन्या से होता है।

नारद के मित्र के रूप में पर्वत मुनि का उल्लेख मिलता है। देवर्षि नारद हाथ में महती नाम की वीणा लेकर, करताल बजाते हुए, मस्तक पर त्रिपुण्ड लगाकर, सिर पर शिखा बांधकर, द्यौत वस्त्र धारण किये हुए भगवन्नामों का उच्चारण करते हुए समस्त त्रिलोकी में भ्रमण करते हैं। देवर्षि नारद के दिव्य गुणों का वर्णन वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक साहित्य पर्यन्त निम्नलिखित प्रकार से मिलता है-

वैदिक साहित्य में देवर्षि नारद

साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज के रूप रंग, वृद्धि-ह्रास, उत्थान-पतन, समृद्धि-दुरवस्था के निश्चित ज्ञान का प्रधान साधन तत्कालीन साहित्य होता है। वैदिक साहित्य वह ज्योतिस्तम्भ है जिसके प्रकाश में हम अपने गौरवमय अतीत की झांकी देख सकते हैं। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य को सहिताओं, ब्राह्मणग्रन्थों, आरण्यक ग्रन्थों उपनिषद् तथा वेदाङ्गें में विभाजित किया जाता है।

ऋग्वेद के अष्टम मण्डल के तेरहवें सूक्त में देवर्षि नारद का मन्त्र द्रष्टा के रूप में वर्णन मिलता है। **अर्थववेद** में अङ्गिरा ऋषि से उपदेश प्राप्त करते हुए देवर्षि नारद जिज्ञासु के रूप में दर्शनीय हैं। ऋग्वेद के **ऐतरेय ब्राह्मण** की सप्तमपञ्चिका के तृतीय अध्याय में देवर्षि नारद राजा हरिशचन्द्र के पुरोहित, गुरु के रूप में उनकी पुत्र विषयक चिन्ता का निवारण करते हुए तथा उन्हें उचित मार्गदर्शन देते हुए वर्णित हैं। इसके अतिरिक्त ऐतरेय ब्राह्मण में ही राजा अम्बाष्ठय, सहदेव पुत्र सोमक, तथा युधांश्रौष्टि इत्यादि राजाओं के गुरु के रूप में उल्लिखित हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों के पश्चात् **छान्दोग्योपनिषद्** में देवर्षि नारद सनकादि ऋषियों के समक्ष आत्मतत्व की जिज्ञासा रखते हुए उनसे आत्मज्ञानोपदेश प्राप्त करते हुए दृष्टिगत होते हैं। **वेदाङ्ग साहित्य** के शिक्षा ग्रन्थों

में अर्थात् संगीत मकरन्द तथा नारदीय शिक्षा ग्रन्थ में देवर्षि नारद संगीत शास्त्र विशारद के रूप में दिखाई देते हैं। कल्प सूत्रों के अन्तर्गत धर्म सूत्रों में नारद-भक्ति-सूत्र में भक्ति तत्व का उपदेश देते हुए, नारद स्मृति में मार्कण्डेय ऋषि को न्याय, दायभाग इत्यादि का उपदेश देते हुए वर्णित है। वेदाङ्ग के ज्योतिष शास्त्र में देवर्षि नारद ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान के रूप में उल्लेखनीय है। नारद संहिता, नारदीय ज्योतिष, नारदीय सिद्धान्त, नारदीय-होरा-जातक, इत्यादि ज्योतिष शास्त्रीय ग्रन्थों में देवर्षि नारद ज्योतिष के सिद्धान्तों का वर्णन करते हुए दर्शनीय हैं।

आर्षग्रन्थों में देवर्षि नारद

वैदिक साहित्य के पश्चात् लौकिक साहित्य का उदय होता है। संस्कृत का यह लौकिक साहित्य भाषा, भाव तथा विषय-तीनों दृष्टियों से नितान्त महत्त्वपूर्ण है। रामायण तथा महाभारत नामक आर्षकाव्य परवर्ती सम्पूर्ण लौकिक साहित्य के लिए उपजीव्य बन गये हैं। ये दोनों आर्षकाव्य भी देवर्षि नारद की प्रेरणा से ओतप्रोत हैं। इन दोनों ग्रन्थों में देवर्षि का वर्णन निम्नलिखित प्रकार से प्राप्त होता है-

रामायण में देवर्षि नारद महर्षि वाल्मीकि को श्रीराम चरित के आधार पर काव्य लिखने की प्रेरणा देते हुए दर्शनीय हैं। वे उन्हें भगवान् श्रीराम का संक्षिप्त जीवन चरित सुनाते हैं तथा उन्हें सम्पूर्ण विश्व में उत्तम चरित्र युक्त मनुष्य बताते हैं।

देवर्षि की प्रेरणा से ही महर्षि वाल्मीकि रामायण जैसे विपुल काय ग्रन्थ का निर्माण करते हैं। महर्षि वाल्मीकि के अतिरिक्त रामायण ग्रन्थ में देवर्षि नारद

सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार को राम कथा श्रवण करने का माहात्म्य सुनाते हुए उपदेष्टा के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

महाभारत में देवर्षि नारद उपदेष्टा, जिज्ञासु, दिव्यद्रष्टा, भविष्यवक्ता, त्रिकादर्शी, परदुखहर्ता, परामर्शप्रदाता, सर्वज्ञ, संदेशवाहक इत्यादि रूपों में यत्र-तत्र दर्शनीय हैं। देवर्षि नारद राजाओं में युधिष्ठिरादि पांचो पाण्डवों, दुर्योधनादि कौरव भ्राताओं, धृतराष्ट्र, गांधारी, कुन्ती को उपदेश देते हैं। देवताओं में इन्द्र को ब्राह्मण भक्ति का, भगवान् श्रीकृष्ण को भातृ स्नेह का उपदेश देते हैं। ऋषियों में शुकदेव, व्यास, गालव, तथा धौम्य इत्यादि ऋषियों को ईश्वर भक्ति सम्बन्धी उपदेश प्रदान हैं। भक्तों में प्रचेताओं, दक्षपुत्रों, पुण्डरीक, देवल तथा देवमत इत्यादि को भगवद्भक्ति का उपदेश सुनाते हुए उपदेष्टा के रूप में वर्णित हैं। उपदेशक के अतिरिक्त महाभारत के शांतिपर्व में देवर्षि नारद असित देवल, समङ्ग, नर-नारायण तथा गालव इत्यादि ऋषि के साथ ज्ञान वार्ता करते हुए जिज्ञासु के रूप में दर्शनीय हैं। इस ग्रन्थ के आश्रमवासिक पर्व में देवर्षि द्वारा धृतराष्ट्र, विदुर, संजय इत्यादि को भविष्य में मिलने वाली गति के बारे में बताए जाने से उनकी दिव्य शक्तियों के प्रमाण मिलते हैं। आदि पर्व में देवर्षि नारद पाण्डवों को द्रौपदी संयोग सम्बन्धी नियम बनाने का और राजसूय यज्ञ का परामर्श देते हुए वर्णित हैं। सभा पर्व में देवर्षि नारद का वर्णन भगवान् श्रीकृष्ण को जरासन्ध वध सम्बन्धी परामर्श देते हुए प्राप्त होता है।

इसके अतिरिक्त **वनपर्व** में राजा अश्वपति को उनकी पुत्री सावित्री के विवाह के विषय में परामर्श देते हुए नारद उल्लिखित हैं। **सौप्तिकपर्व** में अश्वत्थमा और अर्जुन के युद्ध के समय अर्जुन को ब्रह्मास्त्र का उपसंहार करने

का परामर्श देते हुए दर्शनीय हैं। इसके अतिरिक्त देवर्षि नारद युधिष्ठिरादि पाण्डवों, राजा मरुत इत्यादि को युक्ति प्रदान करते हुए, ऋषि महर्षियों को शुभ कृत्य करने की प्रेरणा देते हुए, बलराम को महाभारत युद्ध का आँखों देखा वर्णन करते हुए सर्वज्ञ, इतिहास वेत्ता एवं त्रिकालज्ञ के रूप में, कर्ण के जन्म का वृत्तान्त सुनाते हुए गोपनीय विषयों के ज्ञाता की तरह, द्रोणपर्व में पाण्डवों का अभिमन्यु मृत्यु जन्य शोक हरण करते हुए शोकहर्ता की भान्ति तथा दमयन्ती के सौन्दर्य एवं स्वयंवर का समाचार स्वर्गलोक में पहुँचाते हुए सूचना प्रसारक के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। इसके पश्चात् महाभारत ग्रन्थ में देवर्षि नारद भक्ति प्रचारक, नारायण भक्त, प्रेरक, त्रिलोकगामी, सहायक इत्यादि रूपों में वर्णित हैं।

पुराणों में देवर्षि नारद

महर्षि वेदव्यास प्रणीत अष्टादश पुराणों में शैव, वैष्णव, तथा ब्राह्म लगभग सभी पुराणों में देवर्षि नारद दृष्टिगोचर होते हैं। पुराणों में देवर्षि का **उपदेष्टा** रूप मुख्यतया देखने को मिलता है। **पद्मपुराण** में देवर्षि युधिष्ठिरादि पाण्डवों को तीर्थ यात्रा का उपदेश देते हुए मिलते हैं। **शिवपुराण** में देवी पार्वती को शिव प्राप्ति हेतु तपस्या करने का उपदेश देते हुए वर्णित हैं। **श्रीमद्भागवतपुराण** में देवर्षि नारद प्रचेताओं को भागवद्धर्म का उपदेश प्रदान करते दर्शनीय हुए हैं तथा इसी पुराण के सप्तम स्कन्द ममें हिरण्यकश्यप की पत्नी कयाधू को ईश्वरभक्ति का उपदेश प्रदान करते हुए दिखाई देते हैं। अन्यत्र दशम स्कन्द में श्रीकृष्ण के पिता श्रीवसुदेव को मोक्ष धर्म का उपदेश देते हुए उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त युधिष्ठिरादि पाण्डवों, राजा प्राचीनबर्हि, धृतराष्ट्र, गांधारी, उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव को उपदेश देते हुए भी देवर्षि नारद इस पुराण में वर्णित हैं। **ब्रह्मपुराण** में

हर्यश्वों को, **अग्निपुराण** में वसिष्ठ ऋषि को, **लिंगपुराण** में शब्लाश्वों को, **वाराहपुराण** में निमि को, **स्कन्दपुराण** में पाण्डुपुत्र अर्जुन को तीर्थ यात्रा का, राजा पृथु को कार्तिकमास माहात्म्य का, राजा अम्बरीष को वैसाख मास माहात्म्य का तथा राजा इन्द्रद्युम्न को तीर्थ महिमा का उपदेश देते हुए दर्शनीय हैं।

पुराणों में देवर्षि नारद का **जिज्ञासु** रूप भी सर्वाधिक देखने को मिलता है। **नारदपुराण** में आदि से अन्त पर्यन्त देवर्षि नारद सनकादि ऋषियों के समक्ष अपनी जिज्ञासा रखते हैं। **पद्मपुराण** में देवर्षि नारद भगवान् विष्णु के समक्ष भक्ति तत्त्व विषयक जिज्ञासा रखते हैं।

इसके अतिरिक्त पद्म पुराण में ब्रह्मा के समक्ष भगवान् की प्रसन्नता के साधन पूछते हुए भी देवर्षि नारद जिज्ञासु रूप में दर्शनीय है। नारद ऋषि इस पुराण में देवी पार्वती तथा भगवान् शिव के पास भी अपनी जिज्ञासा प्रकट करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। **ब्रह्मपुराण** में देवर्षि नारद कभी सूर्यदेव के समक्ष तो कहीं मित्रावरुण के पास तथा अन्यत्र ब्रह्मदेव के पास जिज्ञासा रखते हुए वर्णित हैं जिससे सम्पूर्ण ब्रह्म पुराण ओत-प्रोत है। **ब्रह्मवैवर्तपुराण** में आदि से अन्त तक देवर्षि नारद का जिज्ञासु रूप ही दर्शनीय है। इस पुराण में वे ब्रह्मदेव, भगवान् शिव एवं नर-नारायण आदि के समक्ष अपने प्रश्नों को रखते हैं। **भागवतपुराण** में देवर्षि नारद ब्रह्मदेव के पास सृष्टि की उत्पत्ति तथा लय के विषय में प्रश्न पूछते हैं। **मत्स्यपुराण** में वे भगवान् शिव से धर्मार्थकाममोक्ष विषयक जिज्ञासा प्रकट करते हैं।

इसके अतिरिक्त देवर्षि नारद को दक्ष द्वारा शाप प्राप्त होने का वर्णन भिन्न-भिन्न पुराणों में मिलता है देवर्षि नारद के जन्म सम्बन्धी कथाएँ तथा ब्रह्मा

के पुत्र होने के प्रमाण भी ब्रह्मवैवर्त, वाराह, श्रीमद्भागवत, ब्रह्म पुराण इत्यादि में मिलते हैं। इसके पश्चात् पुराणों में देवर्षि नारद के सूचना प्रसारक, कौतुकप्रिय, मार्गदर्शक, परदुखहर्ता, कलहप्रिय, देवताओं के सहायक, भगवद्भक्त, भविष्यवक्ता, सर्वगुणसम्पन्न, दिव्यदृष्टिसम्पन्न, त्रिकालज्ञ, भक्तजनहितकारक, तपस्वी, आदर्श शिष्य, विरक्त, कल्याणकारी, दयालु, शिवसेवक, उद्योगी, नैष्ठिक-ब्रह्मचारी, वास्तु विज्ञान ज्ञाता इत्यादि रूप दृष्टिगोचर होते हैं। अतः स्पष्ट है कि वेदव्यास विरचित अष्टादश पुराण साहित्य पूर्णतया देवर्षि नारद की जिज्ञासाओं, उपदेशों इत्यादि से ओतप्रोत हैं।

लौकिक साहित्य में देवर्षि नारद

लौकिक साहित्य के अन्तर्गत पद्य, गद्य तथा चम्पू साहित्य का वर्णन होता है। पद्य साहित्य में महाकाव्य, खण्डकाव्य आदि की गणना की जाती है तथा उन सभी महाकाव्यों में कुमारसम्भव, नैषधीयचरित तथा शिशुपालवध महाकाव्यों में ही देवर्षि नारद के स्वरूप से सम्बन्धित सामग्री उपलब्ध होती है। जिसकी गणना श्रव्य काव्य के अन्तर्गत होती है। तदन्तर दृश्य काव्य के अन्तर्गत कालिदास विरचित विक्रमोर्वशीय नाटक में देवर्षि नारद के दर्शन प्राप्त होते हैं।

कालिदास विरचित '**कुमारसम्भव**' के प्रथम सर्ग में देवर्षि नारद शिव-पार्वती के विवाह की भविष्यवाणी करते हुए भविष्यवक्ता के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं पार्वती के भावी पति के बारे में बताते हैं।इसके अतिरिक्त श्रीहर्ष विचरित '**नैषधीयचरित**' महाकाव्य के पंचम सर्ग में देवर्षि नारद देवराज इन्द्र के हृदय में पृथ्वी लोक निवासी भीम पुत्री दमयन्ती को प्राप्त करने की इच्छा पैदा करते हुए कौतुकप्रिय के रूप में देखने को मिलते हैं। तदन्तर

'शिशुपाल वध' नामक महाकाव्य के प्रथम सर्ग में देवर्षि नारद दिव्य प्रतिभा सम्पन्न पुरुष के रूप में श्रीकृष्ण की सभा में प्रकट होकर वहाँ उपस्थित जनों को आश्चर्यान्वित कर देते हैं। इस महाकाव्य में देवर्षि नारद संगीतशास्त्राचार्य की तरह तथा इन्द्र का सन्देश भगवान् श्रीकृष्ण को सुनाते हुए सन्देशवाहक के रूप में उल्लिखित हैं। कालिदास विरचित विक्रमोर्वशीय नाटक में देवर्षि, इन्द्र का सन्देश राजा पुरुरवा को सुनाते हुए इन्द्र दूत के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। भास प्रणीत बालचरित नाटक में देवर्षि नारद श्रीकृष्णभक्त के रूप में दर्शनीय हैं।

देवर्षि नारद के सम्बन्ध

वैदिक साहित्य में देवर्षि नारद के **अथर्ववेद** तथा **छान्दोग्योपनिषद्** में अङ्गिरा तथा सनत्कुमारादि ऋषियों से घनिष्ठ सम्बन्धों का परिचय मिलता है। इसके अतिरिक्त **ऐतरेय आरण्यक** में राजा हरिश्चन्द्र, आम्बाष्ठय, युधांश्रौष्टि, सहदेवपुत्र सोमक इत्यादि राजाओं के साथ गुरु शिष्य सम्बन्धों के प्रमाण मिलते हैं।

लौकिक साहित्य के आर्ष काव्यों में अर्थात् रामायण तथा महाभारत में देवर्षि नारद के देवताओं, ऋषियों, राजाओं, भक्तों तथा असुरों के साथ अच्छे सम्बन्ध होने के संकेत प्राप्त होते हैं। महर्षि वाल्मीकि प्रणीत **रामायण** महाकाव्य में देवर्षि नारद के वाल्मीकि तथा सनत्कुमारादि ऋषियों के साथ सुमधुर सम्बन्ध दर्शनीय हैं तथा **महाभारत** ग्रन्थ में देवर्षि नारद के **देवताओं में** श्रीकृष्ण, ब्रह्मा शिव इन्द्र इत्यादि से **राजाओं में** युधिष्ठिरादि पाण्डव दुर्योधनादि कौरव, धृतराष्ट्र, गान्धारी, कुन्ती, राजा सृञ्जय, मद्रनरेश अश्वपति, राजा मरुत, बलराम, राजा अकम्पन तथा विदर्भ नरेश इत्यादि से अच्छे सम्बन्ध तथा **ऋषियों में** शुकदेव, वेदव्यास, मार्कण्डेय, देवमत, धौम्य, पर्वत, गालव इत्यादि ऋषियों से घनिष्ठ

सम्बन्ध एवं इसके अतिरिक्त **भक्तों में** प्रचेता, पुण्डरीक, विदुर, संजय, देवकी इत्यादि को ईश्वर भक्ति का उपदेश देते हुए उनसे समधुर सम्बन्धों के प्रमाण मिलते हैं।

महाभारत के पश्चात् **पुराणों में** देवर्षि नारद के **देवताओं में** भगवान् ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव तथा विष्णु के अवतारों से एवं इन्द्रादि से, लक्ष्मी, पार्वती सरस्वती त्रिदेवियों से अच्छे सम्बन्धों के प्रमाण मिलते हैं। **राजाओं में** वे राजा निमि, प्रियव्रत, सगर, हिमालय, अम्बरीष, युधिष्ठिरादि पाण्डव, शत्रुघ्न, विन्ध्याचल, राजा अमित्रजित्, उग्रसेन, इन्द्रद्युम्न, इत्यादि के द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए तथा उनका मार्गदर्शन करते हुए वर्णित हैं। **ऋषियों में** देवर्षि नारद के नारायण ऋषि, शुकदेव, वेदव्यास, मार्कण्डेय, इत्यादि से अच्छे सम्बन्धों की जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त **भक्तों में** प्रह्लाद, ध्रुव, प्रचेता, इत्यादि भक्तों को ईश्वर भक्ति का मार्ग दिखाते हुए उनसे गुरुजनोचित सम्मान प्राप्त करते हुए देवर्षि नारद दर्शनीय है। भक्तों एवं ऋषियों के साथ-साथ देवर्षि नारद **असुरों तथा दानवों** के भी सम्मान पात्र हैं। उनके मयासुर, त्रिपुरासुर, महिषासुर, कंस, इत्यादि से अच्छे सम्बन्धों के प्रमाण, पुराणों के आधार पर मिलते हैं।

तत्पश्चात् **लौकिक साहित्य में** कालिदास विरचित **कुमारसम्भव** महाकाव्य में देवर्षि नारद के भगवान शिव, माता पार्वती तथा पर्वतराज हिमालय के साथ अच्छे सम्बन्धों के प्रमाणों की पुष्टि होती है। माघ विरचित **शिशुपालवध** महाकाव्य में भगवान् श्रीकृष्ण के साथ अच्छे सम्बन्धों के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। तदन्तर श्रीहर्ष प्रणीत **नैषधीयचरित** महाकाव्य में देवराज इन्द्र के साथ अच्छे सम्बन्धों के बारे में पता चलता है। इसके अतिरिक्त **विक्रमोर्वशीय** नामक नाटक

में राजा पुरुरवा के साथ देवर्षि नारद की घनिष्ठ मित्रता के प्रमाणों की पुष्टि होती है। बालचरित नाटक में श्रीकृष्ण से भक्त-भगवान् के सम्बन्धों की जानकारी मिलती है।

उपसंहार

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वैदिक साहित्य में **ऋग्वेद, अथर्ववेद, ऐतरेयारण्यक, छान्दोग्योपनिषद्** से लेकर लौकिक साहित्य में **रामायण, महाभारत,** श्रीमद्भागवतपुराण, शिवपुराण, नारदपुराण, पद्मपुराण इत्यादि **अष्टादश पुराणों** तथा कालिदास रचित **कुमारसम्भव** महाकाव्य और **विक्रमोर्वशीय** नामक नाटक में तथा, श्रीहर्ष प्रणीत **नैषधीयचरित** महाकाव्य में, माघ विरचित **शिशुपालवध** महाकाव्य भास प्रणीत **बालचरित** नाटक इत्यादि में देवर्षि नारद दर्शनीय है। अपने दिव्य, परजन हितकारी तथा आदर्श चारित्रिक गुणों के कारण ही देवर्षि नारद का चरित प्रत्येक जनमानस को प्रभावित तथा आकर्षित करता है।

****